IJAER/ November-December 2024/Volume-13/Issue-6 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

# उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन

शोधार्थी
**सरिता**
शिक्षा विभाग
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला, मुरादाबाद
शोध निर्देशिका
**डा.ऋतु भारद्वाज**

**सारांश**

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य ऊधमसिंह नगर के उच्च शिक्षा में अध्यापनरत शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति को समझना है। न्यादर्श ऊधमसिंह नगर के कुल 08 संस्थानों से एकत्रित किया गया। इन 08 स्कूलों में से 04 शहरी एवं 04 ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों का चयन किया गया। प्रत्येक संस्थान से 10 शिक्षकों का चयन किया गया। इस प्रकार चुने गए शिक्षकों की कुल संख्या 80 हो गई। यादृच्छिक नमूना तकनीक का उपयोग आंकड़े एकत्रण हेतु किया गया। आंकड़ों के संग्रहण हेतु डॉ. (श्रीमती) उम्मे कुलसुम द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण करने हेतु सांख्यिकी के अन्तर्गत मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—परीक्षण का प्रयोग किया गया। शहरी एवं ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के मध्य अभिवृत्ति में शिक्षार्थी के प्रति, समाज के प्रति, व्यवसाय के प्रति, उत्कृष्टता प्राप्त करने एवं मानवीय मूल्यों से सम्बन्धित समस्त आयामों में दोनों समूहों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है।

**कुंजी शब्द—अभिवृत्ति, शहरी व ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षक।**

## प्रस्तावना

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में मात्रात्मक विस्तार पर अधिक ध्यान दिया गया है, जबकि शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर चिंताएँ बनी हुई हैं। किसी भी देश की प्रगति और विकास में उसकी शिक्षा प्रणाली की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक शैक्षिक प्रणाली का मूल आधार होते हैं, क्योंकि वे ही संस्थानों में शिक्षा की गुणवत्ता और सफलता को सुनिश्चित करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से, उच्च शिक्षण संस्थानों के छात्रों के जीवन और कैरियर में एक महत्वपूर्ण मोड़ होता है। यह चरण उनके भविष्य के लिए आधार तैयार करता है और उनकी शैक्षिक दिशा को निर्धारित करता है। इसलिए, उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की भूमिका और उनके प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

उच्च शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थी संवेदनशील दौर से गुजरते हैं, जहाँ उन्हें कई प्रकार के मानसिक और भावनात्मक तनावों का सामना करना पडता है। इस उम्र में छात्र 'पहचान बनाम भूमिका भ्रम' और 'व्यक्तिगत बनाम पारस्परिक संघर्ष' जैसी चुनौतियों से जूझते हैं। यह चरण उनके व्यक्तित्व के निर्माण और भविष्य की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण होता है। ऐसे में, शिक्षकों की भूमिका और भी अधिक प्रभावशाली हो जाती है। विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया और उनके मानसिक विकास पर शिक्षकों के कार्य व्यवहार का गहरा प्रभाव पड़ता है।

शिक्षकों की प्रभावकारिता और उनकी शिक्षण शैली विद्यार्थियों के जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है।

शिक्षकों को अक्सर एक जलते हुए दीपक के समान माना जाता है, जो अपने ज्ञान की रोशनी से विद्यार्थियों के मन और मस्तिष्क को प्रकाशित करते हैं। वे न केवल ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को आकार देने और उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने में भी मदद करते हैं। इसलिए, शिक्षकों का कार्य केवल पाठ्यक्रम पढ़ाने तक सीमित नहीं होता, बल्कि वे विद्यार्थियों के जीवन में मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत की भूमिका भी निभाते हैं।

भारत में शिक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण, संसाधन और समर्थन प्रदान किया जाए। साथ ही, शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, ताकि विद्यार्थियों को एक बेहतर भविष्य के लिए तैयार किया जा सके। शिक्षकों की अभिवृत्ति और उनके योगदान को समझना और उन्हें सशक्त बनाना ही शिक्षा प्रणाली को सुधारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

**संबंधित साहित्य की समीक्षा**

संबंधित साहित्य की समीक्षा किसी भी शोध या अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण और अनिवार्य हिस्सा होती है। इसका मुख्य उद्देश्य अतीत में किए गए शोधों और अध्ययनों के संचित ज्ञान का विस्तृत विश्लेषण करना होता है। यह प्रक्रिया शोधकर्ता को उस विषय से जुड़े पूर्व के निष्कर्षों, सिद्धांतों और तथ्यों को समझने में मदद करती है। साथ ही, यह शोधकर्ता को अनावश्यक दोहराव और संसाधनों की बर्बादी से बचाती है। संबंधित साहित्य की समीक्षा के माध्यम से शोधकर्ता यह जान पाता है कि उससे पहले उस विषय पर क्या कार्य हुआ है, किन पहलुओं पर शोध किया गया है, और किन क्षेत्रों में अभी और अध्ययन की आवश्यकता है।

इस अध्ययन में, अभिवृत्ति संबंधित पूर्व में किए गए शोधों और अध्ययनों की समीक्षा की गई है। अभिवृत्ति एक ऐसा विषय है जिस पर विभिन्न देशों और संस्कृतियों में व्यापक शोध हुए हैं। इन शोधों में अभिवृत्ति पर आधारित असमानताओं, सामाजिक मानदंडों, शैक्षिक और आर्थिक अवसरों में अंतर तथा भूमिकाओं से जुड़े मुद्दों को विस्तार से समझने का प्रयास किया गया है। इन अध्ययनों के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार अभिवृत्ति समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है और इसके क्या सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक परिणाम हो सकते हैं।

संबंधित साहित्य की समीक्षा शोधकर्ता को एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है, जिससे वह अपने शोध को और अधिक प्रभावी और प्रासंगिक बना सकता है। यह प्रक्रिया शोधकर्ता को उन तथ्यों और सिद्धांतों से परिचित कराती है, जो उसके शोध के लिए आधारभूत हो सकते हैं। साथ ही, यह शोधकर्ता को उन कमियों और अंतरालों को पहचानने में मदद करती है, जिन पर अभी तक पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। इस प्रकार,

संबंधित साहित्य की समीक्षा न केवल शोध की गुणवत्ता को बढाती है, बल्कि उसे नवीन और मौलिक बनाने में भी सहायक होती है।

इस अध्ययन में, अभिवृत्ति से संबंधित पूर्व शोधों की समीक्षा करके यह समझने का प्रयास किया गया है कि इस विषय पर क्या कार्य हुआ है और भविष्य में किन पहलुओं पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। इससे शोधकर्ता को एक स्पष्ट दिशा मिलती है और वह अपने शोध को और अधिक प्रभावी ढंग से आगे बढ़ा सकता है।

**शर्मा, मीना व पाल, रीनू (2023)** ने **'अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन'** विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया। शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति के आंकड़ों बताते हैं कि व्यक्ति की सामाजिक जीवन की प्रत्येक क्रिया का निर्धारण उसकी अभिवृत्तियों के माध्यम से होता है। अभिवृत्तियों के विकास पर आयु एवं अनुभवों का प्रभाव विशेष रूप से पड़ता है। यदि हम शिक्षण अभिवृत्ति की बात करें तो शिक्षण अभिवृत्ति को शिक्षण व्यवसाय के प्रति धनात्मक अथवा ऋणात्मक दृष्टिकोणों से लिया गया है। जिनके आधार पर कोई व्यक्ति शिक्षण को व्यवसाय के रूप में चुनता है। शिक्षण अभिवृत्ति वह मानसिक तत्परता है। जिसके द्वारा कोई शिक्षक शिक्षण कार्य को सम्पन्न करता है शिक्षक प्रशिक्षक चाहे अनुदानित महाविद्यालयों में कार्यरत हो उनके अन्दर उचित शिक्षा अभिवृत्ति का होना अनिवार्य है। क्योंकि वह अपने द्वारा दिये जा रहे प्रशिक्षण के माध्यम से भावी शिक्षकों को प्रशिक्षित करते हैं। अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत 5 वर्ष से कम अनुभव रखने वाले शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत 5 वर्ष से अधिक अनुभव रखने वाले शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**दुआ, वंदना व रानी, सीमा (2022)** ने अपना शोध कार्य **'श्री गंगानगर व हनुमानगढ जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण–अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों का अध्ययन'** विषय पर पूर्ण किया। राजकीय एवं निजी स्तर पर संचालित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण संबंधी अभिवृत्ति व्यावसायिक मूल्यों के अभ्यास का अवसर प्राप्त होता है। सरकार इन संस्थाओं के उचित विकास की अनेक योजनाएं बना रही है, ताकि स्तर में गुणवत्ता लायी जा सके। विकास की अनेक योजनाओं को लागू कर उनके स्तर में उचित गुणवत्ता लायी जा सकेगी। राजकीय व निजी स्तर पर संचालित विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण संबंधी अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों में वृद्धि से नवीन ज्ञान को सीखने में मदद मिलेगी, जिससे नए ज्ञान के प्रयोग से विद्यालयों में शिक्षण संबन्धी व प्रशासनिक कार्य करने में आसानी हो सकेगी। विद्यालय का भौतिक व अकादमिक वातावरण वहां कार्य कर रहे शिक्षकों की मानसिकता, शिक्षण संबंधी अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों पर निर्भर करता है। इस अध्ययन के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुझावों से इस स्थिति में सुधार होगा, जिसका प्रत्यक्षत् लाभ इनमें कार्य करने वाले शिक्षकों को मिल सकेगा। बालकों को

गृह कार्य पूर्ण करवाने, नवीन जानकारी देने में अभिभावकों की अहम भूमिका होती है। अत: यह अध्ययन अध्यापकों के अलावा अभिभावकों में भी अध्ययन आदतें विकसित करने में सहयोग कर सकेगा। इस अध्ययन से उनके सामाजिक व शैक्षिक उन्नयन का मार्ग प्रशस्त होगा, जिससे वे समाज में अपना स्तर कायम रखने में सफल होंगे तथा अपनी निर्बलता दूर करेंगे। इस अध्ययन के माध्यम से राज्य तथा केन्द्रीय सरकार को उनके द्वारा चलाई जा रही उत्थान योजनाओं के परिलाभों की जानकारी प्राप्त होगी और प्रत्येक अध्यापक इसके प्रति रुचि ले सकेगा।

**गुप्ता, प्रतिभा एवं सिंह, उदय (2021)** ने **'शिक्षकों की अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन'** अपना शोध कार्य पूर्ण किया। निष्कर्ष में पाया कि प्राचीन काल से लेकर आज तक शिक्षक को समाज के आदर्श व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है शिक्षक ही किसी विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। शिक्षक के लिए सबसे पहली जरूरत है छात्र का समर्थन करना एवं विद्यार्थियों की सकारात्मक अपेक्षाओं को पूरा करना ताकि विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित किया जा सके। शिक्षक का सकारात्मक व्यवहार विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक सम्बन्ध बनाने की अनुमति देता है। शिक्षण प्रणाली में एक अच्छा शिक्षक होने की शर्त संचार प्रक्रिया को अच्छी तरह से जानना है। शिक्षक जो विद्यार्थियों की भावनाओं जैसे— रूचि, भय, चिन्ता को समझने की कोशिश करता है, विद्यार्थियों की सामाजिक गतिविधियों का समर्थन करता है, सराहना करता है। उन्हें इन गतिविधियों के लिए स्वीकृति देता है और उनकी प्रशंसा करता है जो उन्हें मूल्यावान लगती है इससे विद्यार्थियों को महसूस होगा कि उनके बारे मे सोचा जा रहा है, उनकी मदद की जा रही है। अगर शिक्षक ने विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक दृष्टिकोण एवं व्यवहार प्रदर्शित किया है तो विद्यार्थियों के चारित्रिक विकास एवं शैक्षिक विकास की सफलता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, लेकिन अगर शिक्षक ने विद्यार्थियों के साथ नकारात्मक दृष्टिकोण एवं व्यवहार प्रदर्शित किया है तो विद्यार्थियों के चारित्रिक विकास एवं शैक्षिक विकास की सफलता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। शिक्षक का महत्वपूर्ण पक्ष है प्रशंसा करना, यदि बच्चा आलोचना के साथ रहता है तो वह निंदा करना सीखता है और यदि प्रशंसा के साथ रहता है तो बच्चा अपनी क्षमता के साथ मेहनत करके आगे बढ़ता है।

**शोध समस्या कथन**

**उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन**

**शब्दों और चर की परिचालनात्मक परिभाषाएँ—**

**अभिवृत्ति—**

अभिवृत्ति मानव की मानसिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं की दिशा में तैयारी को कहते हैं जिसमें व्यक्ति अपने अनुभवों, दिशाओं और तथ्यात्मक प्रभावों के द्वारा किसी वस्तु के प्रति विशिष्ट व्यवहारों को प्रदर्शित करता है।

शिक्षकों की अभिवृत्ति का अर्थ है पाँच क्षेत्रों के प्रति शिक्षक की अभिवृत्ति— शिक्षार्थी के प्रति, समाज के प्रति, पेशे के प्रति, उत्कृष्टता प्राप्त करना, बुनियादी मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति।

**उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षक—**

वर्तमान अध्ययन में उच्च शिक्षा में अध्यापनरत शिक्षक उन शिक्षकों को संदर्भित करते हैं जो सरकारी या निजी ट्रस्ट/संगठनों द्वारा संचालित उच्च शिक्षण संस्थानों से हैं।

**प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य**

वर्तमान जांच के लिए निम्नलिखित उद्देश्य तैयार किए गए हैं—

- शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।

**प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ**

उपर्युक्त उद्देश्यों के आधार पर, निम्नलिखित परिकल्पनाएँ तैयार की गईं—

- शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के शिक्षार्थी से सम्बन्धित आयाम के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के समाज से सम्बन्धित आयाम के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के व्यवसाय से सम्बन्धित आयाम के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के उत्कृष्टता प्राप्त करने के आयाम के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
- शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के मानवीय मूल्यों से सम्बन्धित आयाम के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

**अध्ययन का परिसीमन**

समय और सीमित संसाधनों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान अध्ययन को निम्न क्षेत्र तक सीमित किया गया है—

- शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों तक सीमित किया गया है।
- ऊधमसिंह नगर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित उच्च शिक्षा से सम्बन्धित संस्थानों को ही चयनित किया गया है।

**शोध विधि एवं पद्धति—**

अनुसंधान के साक्ष्यों, उद्देश्यों और परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को अपनाना उपयुक्त समझा, जिसके माध्यम से आंकड़ों को एकत्रित किया गया।

**अनुसंधान अभिकल्प**

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है।

**उपयोग किए गए उपकरण**

शोधार्थी ने कई उपलब्ध उपकरणों की जांच करने के बाद, आवश्यक जानकारी एकत्र करने के लिए निम्नलिखित शोध उपकरण का चयन किया।

- डॉ. (श्रीमती) उम्मे कुलसुम द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया।

**सांख्यिकीय तकनीक एवं विधियाँ**

सांख्यिकीय तकनीक से एकत्रित जानकारी को मध्यमान, मानक विचलन एवं (टी—परीक्षण) की गणना करके उपयुक्त सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए रखा गया था। शहरी एवं ग्रामीण उच्च शिक्षा के शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के बीच अभिवृत्ति और उसके आयामों के विवरण को समझने के लिए आंकड़ों का विश्लेषण, मध्यमान, मानक विचलन एवं **'टी—अनुपात'** की गणना की गई है।

**तालिका 1-1**

**शिक्षकों की अभिवृत्ति के विभिन्न आयामों पर शहरी एवं ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के बीच मध्यमान, मानक विचलन और टी—मूल्य**

| अभिवृत्ति के आयाम | शहरी उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षक (N-40) | | ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षक (N-40) | | टी—मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| | मध्यमान | मानक विचलन | मध्यमान | मानक विचलन | |
| शिक्षार्थी से सम्बन्धित | 61.68 | 4.14 | 58.68 | 5.95 | 2.618 |
| समाज से सम्बन्धित | 62.11 | 5.58 | 58.89 | 5.52 | 2.595 |
| व्यवसाय से सम्बन्धित | 55.23 | 4.62 | 52.85 | 5.59 | 2.076 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **उत्कृष्टता प्राप्त करना** | 53.95 | 4.89 | 51.23 | 4.74 | 2.526 |
| **मानवीय मूल्यों से सम्बन्धित** | 54.49 | 4.87 | 52.03 | 4.63 | 2.315 |

**विश्लेषण एवं व्याख्या**

उच्च शिक्षण संस्थानों के शहरी शिक्षकों के अभिवृत्ति के शिक्षार्थी से सम्बन्धित अभिवृत्ति का मध्यमान ($M_1$=61.68) तथा मानक विचलन 4.14 प्राप्त हुआ एवं ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों का मध्यमान ($M_2$=58.68) तथा मानक विचलन 5.95 प्राप्त हुआ। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 2.618 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 78 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना 'शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के शिक्षार्थी से सम्बन्धित आयाम के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है। औसत स्कोर विश्लेषण से, यह देखा गया है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के बीच अभिवृत्ति के शिक्षार्थी से सम्बन्धित आयाम में शहरी उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की शिक्षार्थी के प्रति अभिवृत्ति ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की तुलना में उच्च है।

उच्च शिक्षण संस्थानों के शहरी शिक्षकों के अभिवृत्ति के समाज से सम्बन्धित अभिवृत्ति का मध्यमान ($M_1$=62.11) तथा मानक विचलन 5.58 प्राप्त हुआ एवं ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों का मध्यमान ($M_2$=58.89) तथा मानक विचलन 5.52 प्राप्त हुआ। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 2.595 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 78 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना 'शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के समाज से सम्बन्धित आयाम के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है। औसत स्कोर विश्लेषण से, यह देखा गया है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के बीच अभिवृत्ति के समाज से सम्बन्धित आयाम में शहरी उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की समाज से सम्बन्धित अभिवृत्ति ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की तुलना में उच्च है।

उच्च शिक्षण संस्थानों के शहरी शिक्षकों के अभिवृत्ति के व्यवसाय से सम्बन्धित अभिवृत्ति का मध्यमान ($M_1$=55.23) तथा मानक विचलन 4.62 प्राप्त हुआ एवं ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों का मध्यमान ($M_2$=52.85) तथा मानक विचलन 5.59 प्राप्त हुआ। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 2.076 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 78 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना 'शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के व्यवसाय से सम्बन्धित आयाम के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है। औसत स्कोर विश्लेषण से, यह देखा गया है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के

शिक्षकों के बीच अभिवृत्ति के व्यवसाय से सम्बन्धित आयाम में शहरी उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की व्यवसाय से सम्बन्धित अभिवृत्ति ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की तुलना में उच्च है।

उच्च शिक्षण संस्थानों के शहरी शिक्षकों के अभिवृत्ति के उत्कृष्टता प्राप्त करने का मध्यमान ($M_1$=53.95) तथा मानक विचलन 4.89 प्राप्त हुआ एवं ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों का मध्यमान ($M_2$=51.23) तथा मानक विचलन 4.74 प्राप्त हुआ। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 2.526 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 78 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना 'शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के उत्कृष्टता प्राप्त करने से सम्बन्धित आयाम के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है। औसत स्कोर विश्लेषण से, यह देखा गया है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के बीच अभिवृत्ति के उत्कृष्टता प्राप्त करने से सम्बन्धित आयाम में शहरी उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की उत्कृष्टता प्राप्त करने से सम्बन्धित अभिवृत्ति ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की तुलना में उच्च है।

उच्च शिक्षण संस्थानों के शहरी शिक्षकों के अभिवृत्ति के मानवीय मूल्यों से सम्बन्धित का मध्यमान ($M_1$=54.49) तथा मानक विचलन 4.87 प्राप्त हुआ एवं ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों का मध्यमान ($M_2$=52.03) तथा मानक विचलन 4.63 प्राप्त हुआ। प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिकलित टी—मूल्य 2.315 प्राप्त किया गया है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वतन्त्रता के अंश 78 पर सारणी में दिए गए टी—मूल्य के मान 1.96 से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना 'शहरी और ग्रामीण उच्च शिक्षा से सम्बन्धित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति के मानवीय मूल्यों से सम्बन्धित से सम्बन्धित आयाम के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है' अस्वीकृत की जाती है। औसत स्कोर विश्लेषण से, यह देखा गया है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों के बीच अभिवृत्ति के मानवीय मूल्यों से सम्बन्धित से सम्बन्धित आयाम में शहरी उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की उत्कृष्टता प्राप्त करने से सम्बन्धित अभिवृत्ति ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की तुलना में उच्च है।

**परिणाम एवं निष्कर्ष**

एकत्रित आंकड़ों के आधार पर गणना करने पर पाया गया कि शहरी एवं ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों के मध्य अभिवृत्ति के विभिन्न आयाम जैसे शिक्षार्थी से सम्बन्धित, समाज से सम्बन्धित, व्यवसाय से सम्बन्धित, उत्कृष्टता प्राप्त करने एवं मानवीय मूल्यों से सम्बन्धित अभिवृत्ति में शहरी एवं ग्रामीण उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्यापनरत शिक्षकों की तुलना करने पर पाया गया कि शहरी उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्यापन शिक्षकों की अभिवृत्ति उच्च स्तरीय पायी गयी। इसके अन्तर्गत पाया गया कि वातावरण के मुख्य प्रकार जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरणएवं वर्तमान तकनीकी के प्रयोग का भी शिक्षकों के व्यवहार एवं अभिवृत्ति का प्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षकों की अभिवृत्ति पर पड़ता है।

**संदर्भ ग्रन्थ**

- ओझा, गार्गी एवं वर्मा, मधु (2018) 'महाविद्यालयों में अध्यापनरत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन', आई.जे.एस.आर.एस.टी.ए आई.एस.एस.एन.— ई.-2395-602X, पी.—2395-6011, वाल्यूम-4, इश्यू-7
- दुआ, वंदना व रानी, सीमा (2022) 'श्री गंगानगर व हनुमानगढ़ जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण—अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक मूल्यों का अध्ययन' जे.ई.टी. आई.आर., ई.—2349-5162, वाल्यूम-6, इश्यू-4
- गुप्ता, प्रतिभा एवं सिंह, उदय (2021) ने 'शिक्षकों की अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन' आई.जे.एस.आर.एस.टी.ए आई.एस.एस.एन.— पी.—2395-6011, वाल्यूम-6, इश्यू-8

- जैन, रीना एवं जैन, प्रीति (2015) 'विद्यालयी शिक्षकों एवं शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति, व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं व्यावसायिक मूल्यों का अध्ययन' ए.आई.जे.आर.ए., आई.एस.एस.एन. –2455-59627, वाल्यूम-6, इश्यू-1
- कुमारी, अपर्णा एवं अग्रवाल, निधि (2020) ने अपना षोध पत्र 'माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति' जरनल ऑफ एडवांस्ड एण्ड स्कॉलरली रिसर्चेज इन एलाइड एजूकेषन, आई.एस.एस.एन.— ई.-2230-7540, वाल्यूम-17, इश्यू-1
- नाइक, पी.के., सिंह, एस. (2013) 'सरकारी और निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की शिक्षक अभिवृत्ति: एक अध्ययन', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन, 5(2), 125–131
- एन.सी.ई.आर.टी. (1997) 'शैक्षणिक अनुसंधान का पांचवां सर्वेक्षण (1988-92)' खंड, नई दिल्ली।
- राणा शिवानी (2019) 'चयनित चर के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति' पत्रिका शिक्षा में अनुसंधान—7(1)- 1-18
- रविकांत (2011) 'माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं उत्तरदायित्व भावना का अध्ययन उनका लिंग और स्थान' एकेडमिक रिसर्च इंटरनेशनल, 1(2), 254-259
- शर्मा, मीना व पाल, रीनू (2023) 'अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन' शोधपत्र, इण्टरनेशनल जनरल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च इन साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी, पी. 2395-6011, वाल्यूम-4, इश्यू-7